अध्याय 18

1857 का स्वतंत्रता संग्राम

1757 ई. में प्लासी के युद्ध में विजय प्राप्त करके अंग्रेजों ने बंगाल में अपने साम्राज्य की नींव डाली। धीरे–धीरे अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। भारत पर अधिकार करने के लिए अंग्रेजों ने छल–कपट का प्रयोग किया। भारतीयों की आपसी फूट का फायदा भी उठाया। इस दौरान अंग्रेजों के अत्याचारों और विश्वासघात से पीड़ित होकर भारतीयों ने कई स्थानों पर उनके विरूद्ध संघर्ष किया। जैसे बंगाल में सन्यासियों ने विद्रोह किया, महाराष्ट्र में रामोसी जाति ने तथा पूरे देश में विभिन्न जनजातियों और अंग्रेज सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी समय–समय पर संघर्ष किया। किन्तु ये सारे प्रयास स्थानीय स्तर पर हुए और अलग–अलग समय पर हुए । अतः यह व्यापक रूप धारण नहीं कर पाए व असफल रहे। अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध सबसे बड़ी और देशव्यापी क्रांति 1857 ई. में हुई थी । इस क्रान्ति को जनता का भी समर्थन प्राप्त था। अतः इसे देश का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता हैं। 1857 ई. में हुई यह क्रांति किसी एक घटना या कारण का परिणाम नहीं थी बल्कि विगत सौ वर्षों में अंग्रेजों ने भारत के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन में जो अनुचित हस्तक्षेप किए थे उनके विरूद्ध भारतीय जनमानस की प्रतिक्रिया थी। इस स्वतंत्रता संग्राम के होने के निम्नांकित कारण रहे :–

संग्राम के कारण

राजनीतिक कारण

क्लाइव ने अपनी कूटनीति से ईस्ट इण्डिया कंपनी को, जो एक व्यापारिक संस्था थी, राजनीतिक संस्था बना दिया। वेलेजली और हेस्टिंग्स ने अंग्रेजी राज्य में अनुचित ढंग से राज्य वृद्धि के प्रयास किए। कालांतर में डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के लिए एक नयी नीति बनाई। जिन देशी राजाओं के कोई अपनी संतान नहीं थी, उनके राज्यों को अंग्रेजी राज्य में मिलाना शुरु कर दिया। हिन्दुओं में गोद लेने की प्रथा रही

है। पुत्र नहीं होने की स्थिति में राजा लोग अपनी रिश्तेदारी या बिरादरी में से किसी लड़के को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए गोद लेते थे। राजा के मरने के बाद वही लड़का राज्य का स्वामी होता था। डलहौजी ने इस प्रथा को अमान्य कर दिया। उसकी यह नीति 'गोद–निषेध' नीति कहलाई। इस नीति का प्रभाव अनेक राज्यों पर पड़ा, जिनमें सम्बलपुर, जेतपुर,सतारा, नागपुर, बिठूर और झांसी मुख्य थे।

सैद्धांतिक रूप से मुगल सम्राट अब भी भारत का बादशाह था, परन्तु उसका अपमान किया गया। सिक्कों पर उसके नाम के बजाय इंग्लैंड के राजा का नाम उत्कीर्ण करवाया गया। इसी प्रकार पूर्व में मराठा पेशवा से उसका साम्राज्य छीनकर उसे पेंशन दे दी गई। कालांतर में उसके पुत्र व नवीन पेशवा नानासाहब की पेंशन भी बंद कर दी गई। इससे भारतीय जनमानस में रोष व्याप्त हो गया।

अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति से भारत के शासक चिंतित हो गए थे। अंग्रेजों ने साम्राज्य विस्तार के दौरान भारतीय शासकों से संधियाँ की व उनसे वादा किया था कि अंग्रेज उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। किन्तु अंग्रेजों ने पॉलिटिकल एजेंटों के माध्यम से देशी शासकों के राज्यों में निरंतर हस्तक्षेप किए तथा बाद में प्रशासनिक अव्यवस्था के नाम पर कुछ क्षेत्रों को हड़प लिया, जैसे अवध का राज्य।

शासकों के अतिरिक्त सामंत वर्ग भी अंग्रेजों से नाराज था। यहाँ का सामंत वर्ग अपनी जनता से कर वसूल करता था तथा राजा को देता था। युद्ध के समय राजा को सैनिक शक्ति प्रदान करता था। अतः दरबार में सामन्तों का सम्मान था। किन्तु सहायक संधियों के बाद शासकों की सामंतों पर से निर्भरता खत्म हो चुकी थी व राजाओं ने सामन्तों के अधिकारों में कटौती कर दी। सामन्त इस का कारण अंग्रेजी शासन को मानते थे, जैसे मेवाड़ के सामन्त विशेषतया रावत केसरी सिंह (सलूम्बर) महाराणा के दुर्व्यवहार को अंग्रेजों की शह मानते थे। जोधपुर में ठाकुर अजीत सिंह (आलणियावास) पॉलिटिकल एजेण्ट से अत्यन्त नाखुश था। जयपुर में दीवान झूँथाराम ने अंग्रेजी समर्थन के बल पर जागीरदारों को उनके पैतृक अधिकारों से वंचित कर देने पर बाध्य किया। जोधपुर में आहुवा, आसोप, गुलर, आलणियावास के सामन्त शासक से नाराज थे और अपनी शक्तिहीनता का कारण अंग्रेजों को मानते थे। शासकों और सामंतों की निर्णय लेने की स्वतन्त्रता भी कंपनी शासन में खत्म हो गई थी।

सामाजिक व धार्मिक कारण

सामाजिक सुधार के नाम पर भारतीयों के जीवन में अंग्रेजों ने हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था। इसकी भारतीयों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इसके अतिरिक्त अंग्रेज, भारतीय नागरिकों के साथ अपमानजनक व्यवहार करते थे। एक सामान्य अंग्रेज भी बड़े से बड़े भारतीय का अपमान कर देता था। भारतीय रीति रिवाजों का मजाक उड़ाया गया। भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता था। इससे भारतीय समाज में नाराजगी थी। धार्मिक क्षेत्र में सरकार ने ईसाई धर्म के प्रचार की छूट दे दी, जिससे ईसाई मिशनरियों ने समाज के कमजोर वर्ग को धर्म परिवर्तन करवाने का कार्य आरम्भ कर दिया। भारतीय देवी–देवताओं व पूजा विधियों की खिल्लियाँ उड़ाई जाने लगी। जेल में कैदियों को ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाता था। ईसाई धर्म स्वीकार करने पर उनकी सजा में कमी कर दी जाती तथा अन्य कैदियों की तुलना में ज्यादा सुविधाएँ दी जाती थी। ईसाई बनने वालों को सरकारी नौकरी में ऊँचे पदों पर बिठाया जाता था। इस नीति ने भारतीय समाज के मन में अंग्रेजों के विरूद्ध घोर विद्रोह पैदा कर दिया।

आर्थिक कारण

कम्पनी के शासन के पूर्व भारत एक कृषि एवं उद्योग प्रधान देश था। इसकी आर्थिक सम्पन्नता के कारण इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था तथा यह विश्व के व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। अंग्रेजों ने सत्ता प्राप्ति के बाद इसका बेरहमी से शोषण किया।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व बंगाल एक समृद्ध प्रांत था। किन्तु अंग्रेजों ने उसे इस कदर लूटा कि वहाँ भूखमरी व्याप्त हो गई। लाखों लोग अकाल में मारे गए। बंगाल के मैदानों में भारतीय किसानों व दस्तकारों की हड्डियों के ढ़ेर लग गए। अंग्रेजों ने किसानों से इतना अधिक भू–राजस्व वसूला कि किसान खेती छोड़ने को बाध्य हो गए व कई पुराने जमींदार लगान न दे पाने के कारण जमींदारी खो बैठे।

अंग्रेजों ने इंग्लैण्ड में बने माल को भारत में खपाने के लिए भारतीय वस्त्रों पर भारी कर लगाया और दस्तकारों पर अत्याचार किया, जिससे उन्होंने अपना पुश्तैनी कार्य त्याग दिया।

राजस्थान में भी अंग्रेजों ने शासकों से भारी मात्रा में खराज वसूल करना शुरू कर दिया व आर्थिक संसाधनों पर भी अंग्रेज नियन्त्रण करने लगे। अंग्रेजों ने अफीम व नमक के व्यापार पर अधिकार जमा लिया। उन्होंने बकाया खराज के नाम पर जयपुर व जोधपुर से उनके नमक उत्पादन के स्रोत छीन लिए। समस्त रियासतों से समझौता कर नमक पर चुंगी लागू कर दी, जिससे जनता में भारी रोष फैला, जिसकी अभिव्यक्ति तत्कालीन प्रचलित लोकगीत में देखी जा सकती है–

म्हारो राजा तो भोलो भालो, सांभर तो दे दीनी इंगरेज ने।
पण म्हारा टाबर तो भूखा, रोटी मांगे तीखे लूण री।।

ठीक इसी प्रकार हाड़ौती (दक्षिणी राजपूताना) में अफीम की पैदावार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए बंगाली अफीम के मुकाबले यहाँ अफीम को नियंत्रित करने हेतु भारी कर लगाए, जिससे यहाँ के किसानों एवं व्यापारियों को भारी नुकसान हुआ। इससे यहाँ भारी मात्रा में तस्करी बढ़ी व खाद्यान्न संकट पैदा हो गया। सम्पूर्ण राजपूताने में नमक से अंग्रेजों ने भारी मुनाफा कमाया। राजपूताने के अन्य सम्बन्धित उद्योग धंधे नष्ट हो गए।

सैनिक कारण

अंग्रेजों की सेना में अधिकांश अवध के सैनिक थे। अवध को अंग्रेजी राज्य में मिलाने के बाद इन सैनिकों के मनोबल को बड़ा धक्का लगा। उनके मन में विद्रोह के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे। कई सैनिक अपनी परम्पराओं के अनुसार रहन–सहन व खान–पान रखना चाहते थे। वे बाल–दाढ़ी रखते व पगड़ी या साफा बांधते थे। अंग्रेजों ने इस पर पाबंदी लगा दी, जिसे सैनिकों ने अपना घोर अपमान समझा। भारतीय सैनिकों को मान्य परम्पराओं के विरुद्ध बाह्य देशों में भेजा जाने लगा। इससे अंग्रेजों के प्रति उनकी नाराजगी बढ़ गई। भारतीय सैनिकों को वेतन भी कम मिलता था। उन्हें वर्दी के पैसे भी स्वयं को देने पड़ते थे। डाक द्वारा उनका निःशुल्क पत्र व्यवहार भी बंद कर दिया गया। सैनिकों में असंतोष का सबसे जबरदस्त कारण कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी का होना था, जिन्हें काम लेने से पहले दांतों से काटना पड़ता था। इन सभी कारणों से सेना में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह करने की भावना पैदा हो गई।

जन कवियों एवं साहित्यकारों की भूमिका

अंग्रेजों के हाथों अपनी सत्ता गंवाना सभी को खल रहा था। राजपूताना का जनमानस स्वाभिमानी एवं स्वतंत्रता प्रेमी था। यहाँ के साहित्यकार और कवि भी समाज एवं शासकों को स्वातंत्र्य प्रेम तथा बलिदान करने के लिये बढ़ चढ़कर प्रेरित करते रहे।

अंग्रेजों से संधियों के बाद राजपूताने में अंग्रेजों की उपस्थिति मात्र से साहित्यकार उद्वेलित एवं व्यथित थे। जोधपुर के बाँकीदास, बून्दी के सूरजमल मिसण, आढ़ा जवानजी, बारहठ दुर्गादत्त, आढ़ा जादूराम, आसिया बुधजी, गोपालदान दधिवाड़िया आदि न जाने कितने ही साहित्यकार थे, जिन्होंने अंग्रेजों की घोर निन्दा की। अपनी जनता एवं शासकों को उनके विरूद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित किया। राजा से लेकर रंक तक ने अंग्रेजों के खिलाफ संग्राम के बीज बोने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जैसा कि कवि बांकीदास ने लिखा–

आयो इंगरेज मुलक रे ऊपर, आहंस लीधा खेंचि उरा।
धणियां मरे न दीधी धरती, धाणियां ऊभां गई धरा।

अर्थात् अंग्रेज भारत में आये और उन्होंने हमारी सांसो तक पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया अर्थात प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार कर लिया। पहले स्वामी मर जाते थे परन्तु मातृभूमि को पराधीन नहीं होने देते थे, किन्तु खेद है कि अब स्वामियों के जीवित होते हुए भी मातृभूमि पराधीन हो गई है।

गतिविधि :–

राजस्थानी लोक कवियों द्वारा 1857 पर लिखी गई कुछ अन्य रचनाओं का संकलन कीजिए।

सूरजमल मिसण ने पीपल्या के ठाकुर फूलसिंह को वि.सं. 1914 को पत्र लिखते हुए राजाओं को लताड़ा– ''ये राजा लोग देश पात जमीं का ठाकर छे, जे सारा ही हिमालय का गलयाई नीसरया। सो चालीस से लैर साठ सत्तर बरस तांई पांछा पटक्या छै तो भी गुलामी करै छै। पर यो म्हारो वचन राज याद राखोगा। क जे अब के अंगरेज रह्यो तो इंको ही पूरौ कर सी। जमीं को ठाकुर कोई भी न रहसी। सब ईसाई हो जा सी। तीसो दूरन्देशी फायदो कोई कै भी नहीं..... ।''

अंग्रेजों की छावणियाँ लूटने वाले डूँगजी एवं जवाहर जी की प्रशंसा में लोक गीत रचे गए। बीकानेर के शासक की तारीफ कवियों ने की, क्योंकि उन्होंने जवाहर जी को अंग्रेजों को सौंपने से मना कर दिया। जोधपुर के शासक पर व्यंग्य इसलिये करते, क्योंकि उन्होंने डूँगजी को अंग्रेजों को दे दिया था।

उपरोक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि राजपूताने के साहित्यकारों ने शासकों, सामन्तों एवं जनता को प्रेरित कर 1857 के संग्राम के लिए बारूद तैयार किया। इस संग्राम की लहर पूरे देश में फैल गई। जगह–जगह भारतीय सैनिकों, सामंतों व शासकों के साथ जनता ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। तो फिर राजपूताना पीछे क्यों रहने वाला था ?

क्रांति का विस्फोट और उसका प्रसार

रानी लक्ष्मीबाई

तांत्या टोपे

मंगल पाण्डे

क्रांति की योजना नानासाहब पेशवा और उनके सहयोगी अजीमुल्ला तथा रंगोजी बापू ने मुख्य रूप से तैयार की थी। मुगल बादशाह बहादुरशाह के नेतृत्व में 31 मई 1857 ई. के दिन समूचे भारत में एक साथ क्रांति शुरू करनी थी। इसके लिए लाल किले में गुप्त बैठकें हुईं। क्रांति के संदेशवाहकों ने विभिन्न रूपों में देश के विभिन्न भागों में क्रांति के प्रतीक चिह्न 'कमल का फूल' और 'चपाती' (रोटी) को घुमाया। 31 मई को सभी जगह एक साथ क्रांति का श्रीगणेश करना था। परन्तु चर्बी वाले कारतूसों से उत्पन्न आक्रोश ने सारी योजना छिन्न–भिन्न कर दी। क्रांति 31 मई से पूर्व ही अधूरी तैयारी में आरंभ हो गई। 29 मार्च को बैरकपुर की छावनी में सैनिकों को चर्बी चढ़े कारतूस वितरित किए गए। उन्होंने उसे दाँतों से काटने से मना कर दिया। अंग्रेज अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया। तब तक मंगल पाण्डे नामक एक सैनिक ने अपनी बंदूक तानकर वहाँ उपस्थित दोनों अधिकारियों को ढेर कर दिया। पाण्डे पकड़ा गया और उसे 8 अप्रेल को फाँसी दे दी गई। मेरठ में एक भारतीय पलटन को चर्बी वाले कारतूस दिए गए। सैनिकों ने उनका उपयोग करने से मना कर दिया। उन सबको गिरफ्तार कर लिया गया। इससे सैनिकों में असंतोष फैल गया। यह घटना 9 मई को घटित हुई थी। क्रांति के नेताओं ने क्रुद्ध सैनिकों को समझा बुझाकर 31 मई तक प्रतीक्षा करने को कहा मगर अगले दिन ही सैनिकों ने विद्रोह कर अपने गिरफ्तार साथियों को रिहा करवा दिया। कई अंग्रेज अधिकारी मार डाले गए। सैनिकों ने दिल्ली की ओर कूच किया। 11 मई को दिल्ली पर अधिकार जमाकर बहादुरशाह को सम्राट घोषित कर दिया।

इसी के साथ धीरे–धीरे क्रांति की ज्वाला भारत के अन्य हिस्सों में फैल गई। कानपुर में नानासाहब व तांत्या टोपे ने क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने कानपुर पर अधिकार कर लिया। अवध में बेगम हजरत महल के नेतृत्व में अवध की जनता ने संघर्ष आरंभ कर दिया। इसी प्रकार झांसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में बाबू कुँवर सिंह, असम में दीवान मणिराम व कंदर्पेश्वर सिंह, उड़ीसा में सुरेन्द्र शाही व उज्ज्वल शाही ने क्रांति का नेतृत्व किया।

उस समय भारत का गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग था। उसने मद्रास, बंबई, बर्मा व लंका से सेनाओं को बुला लिया। पंजाब की सिख सेना व नेपाल की गोरखा सेना ने भी अंग्रेजों का साथ दिया। सेनापति जनरल नील ने बनारस और इलाहाबाद को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाया। नाना साहब की सेना भी कानपुर में पराजित हो गई। अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर बहादुरशाह को कैद कर लिया। उसके दो बेटे गोलियों से भून दिए गए तथा बादशाह को कैद कर रंगून की जेल में भेज दिया। लेकिन तांत्या टोपे और लक्ष्मीबाई ने जमकर अंग्रेजों से लोहा लिया। कुछ विश्वासघातकों ने झांसी के किले के फाटक खोल दिए किन्तु रानी वहाँ से दुश्मनों की सेना को चीरती हुई बच निकली और कालपी पहुँची। वहाँ तात्या टोपे भी आ

पहुँचा। दोनों ने ग्वालियर पर आक्रमण किया। ग्वालियर को अंग्रेजी सेना ने घेर लिया। रानी वहाँ से बच निकली पर एक स्थान पर शत्रु सेना द्वारा घेर ली गई। अब बच निकलने का कोई उपाय न देखकर वह शत्रु सेना में प्रलय मचाती हुई अंत में वीरगति को प्राप्त हुई। तांत्या टोपे अब अकेला रह गया लेकिन वह शत्रुओं की निगाहों से बचता हुआ जगह–जगह अंग्रेजों की नींद हराम करता रहा। अंत में विश्वासघातकों के कारण वह भी पकड़ा गया और अंग्रेजों ने उसे फांसी दे दी। इस तरह मंगल पांडे, तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई आदि भारत माँ के सपूत स्वतन्त्रता संग्राम की पहली लड़ाई में शहादत को प्राप्त हुए।

राजस्थान का 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

भारतीय क्रांति का प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ा। राजस्थान में उस समय नसीराबाद, ब्यावर, खेरवाड़ा, देवली, एरिनपुरा और नीमच में अंग्रेजों की सैनिक छावनियाँ थी तथा अजमेर में अंग्रेजों का ए.जी.जी. बैठता था जो राजस्थान के शासकों पर नियन्त्रण रखता था।

मानचित्र पैमाने पर आधारित नहीं है।

राजस्थान में क्रांति की शुरूआत नसीराबाद से हुई। 28 मई को नसीराबाद में तैनात पन्द्रहवीं नेटिव बंगाल इनफैंट्री के सैनिकों ने अपने अधिकारियों पर हमला कर दिया। सैनिक दिल्ली की ओर रवाना हो गए जहाँ वे क्रांतिकारियों का साथ देना चाहते थे।

नीमच में मोहम्मद अली बेग नामक सैनिक ने कर्नल अबॉर्ट को चुनौती दी व 3 जून को नीमच में भी क्रांति हो गई । अंग्रेजों ने भाग कर उदयपुर में शरण ली। कप्तान शॉवर्स मेवाड़ की सेना लेकर नीमच आया। तब तक क्रांतिकारी वहाँ से दिल्ली के लिए रवाना हो चुके थे। इन क्रांतिकारी सैनिकों के शाहपुरा पहुंचने पर वहां के शासक ने स्वागत किया तथा उसने पीछा करने वाले अंग्रेजों के लिए अपने किले के दरवाजे नहीं खोले। वहां से नीमच के सैनिक भी दिल्ली की ओर रवाना हो गए।

21 अगस्त 1857 को एरिनपुरा छावनी में तैनात एक टुकड़ी ने आबू में अंग्रजों का विरोध कर दिया एवं वहाँ अंग्रेज अधिकारियों पर हमले किए। एरिनपुरा आकर सैनिकों ने छावनी को लूटा। ''चलो दिल्ली मारो फिरंगी'' का नारा लगाते हुए वे दिल्ली की ओर बढ़े।

एरिनपुरा के सैनिकों की भेंट 'खेरवा' नामक स्थान पर आउवा (पाली) के ठाकुर कुशालसिंह से हुई।

कुशालसिंह जोधपुर महाराजा व अंग्रेजों से असंतुष्ट थे। उसने सैनिकों का नेतृत्व संभाल लिया। कुशालसिंह के आह्वान पर आसोप, आलनियावास व गुलर के सामन्त अपनी सेनाओं सहित आउवा आ पहुँचे। खेजड़ला (मारवाड़) तथा मेवाड़ के सलूम्बर, रूपनगर, लहसानी आदि के सामन्तों ने भी अपने सेनाएँ उनकी सहायता हेतु भेज दी। जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने सैनिक विरोध के समाचार मिलते ही अपनी राजकीय सेना क्रान्तिकारी सैनिको के विरूद्ध आउवा भेजी। कुशालसिंह की सेना ने 8 सितम्बर 1857 को 'बिथोड़ा' नामक स्थान पर जोधपुर राज्य की सेना को बुरी तरह परास्त किया। इस पराजय की खबर सुनकर ए.जी.जी. जार्ज लोरेन्स स्वयं सेना लेकर आउवा पहुँचा, किन्तु 18 सितम्बर 1857 को वह भी पराजित हुआ। जोधपुर का पॉलीटिकल एजेन्ट मेकमोंसन क्रांतिकारियों द्वारा मारा गया। उसका सिर आउवा के किले के द्वार पर लटका दिया गया। लोरेन्स पुनः अजमेर लौट गया। इधर अक्टूबर 1857 में जोधपुर लिजियन के क्रांतिकारी सैनिक भी दिल्ली की ओर बढ़े।

कुशालसिंह

जनवरी 1858 में होम्स के नेतृत्व में एक सेना ने आउवा पर आक्रमण कर दिया। ठाकुर कुशालसिंह ने सलूम्बर के सामन्त के यहाँ शरण ली। अंग्रेजों ने आउवा के किलेदार को रिश्वत देकर किले के द्वार खुलवा

आउवा के किले का द्वार जहां मेक मोंसन का सिर काटकर लटका दिया गया

दिए एवं किले पर अधिकार कर लिया। आउवा के निवासियों पर अमानवीय अत्याचार किए गए। 1860 में नीमच में कुशालसिंह ने अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उस पर मुकदमा चलाया गया, जिसमें बाद में उसे बरी कर दिया गया।

राजस्थान में क्रांति के प्रमुख केन्द्रों में आउवा के अतिरिक्त कोटा भी था।कोटा का महाराव रामसिंह अंग्रेजों का समर्थक था, किन्तु वह व्याप्त जन असंतोष के कारण सैनिकों पर कोई कार्यवाही न कर सका। मेजर बर्टन ने महाराव को सैनिकों पर कार्यवाही के लिए दबाव डाला। इस पर 15 अक्टूबर 1857 को कोटा की सेना में नाराजगी भड़क उठी। नाराज सैनिकों ने रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर मेजर बर्टन का सिर काटकर पूरे कोटा शहर में घुमाया। राज्य के समस्त प्रशासन पर सैनिकों का नियंत्रण हो गया।

कोटा महाराव की स्थिति अपने ही महल में कैदी के तुल्य हो गई। जयदयाल एवं मेहराब खाँ के नेतृत्व में क्रांतिकारियों का लगभग 6 माह तक कोटा के प्रशासन पर नियंत्रण रहा। मार्च 1858 में जनरल राबर्ट्स के नेतृत्व वाली सेना ने कोटा शहर को क्रांतिकारियों से मुक्त कराया। जयदयाल एवं मेहराब खाँ व अन्य को सरे आम फाँसी दी गई।

इसके अतिरिक्त धौलपुर राज्य की सेना व भरतपुर की जनता में भी विरोधी तेवर देखे गए, यद्यपि वहां के शासकों ने ब्रिटिश भक्ति दर्शाई।

राजपूताने में कुछ सामन्तों ने आउवा के ठाकुर कुशालसिंह के नेतृत्व को स्वीकार करके ब्रिटिश विरोध की नीति अपनाई। क्रांतिकारियों को प्रायः प्रत्येक स्थान पर स्थानीय कृषकों, जनसामान्य, हिन्दू–मुस्लिम दोनों समुदायों का पर्याप्त समर्थन मिला, किन्तु देशी रियासती शासकों ने अंग्रेजों का भरपूर समर्थन किया। वे अंग्रेजों के वफादार रहे। उन्होंने अंग्रेजों को शरण एवं सैनिक सहायता प्रदान की। बीकानेर का शासक तो स्वयं अपनी सेना के साथ अंग्रेजों की सहायतार्थ राज्य के बाहर भी गया। राजाओं के सहयोग के बारे में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने कहा ''इन्होंने तूफान में तरंग अवरोध का कार्य नहीं किया होता तो, हमारी कश्ती बह जाती।''

1857 के स्वतंत्रता के संग्राम के पूर्व सीकर क्षेत्र में डूँगजी व जवाहर जी नामक काका–भतीजा प्रसिद्ध सेनानी रहे। इन्होंने अंग्रेजों की बीकानेर व जोधपुर की सेना से संघर्ष किया।

डूँगजी व जवाहर जी

सुगाली माता

अपने बलिदान के कारण ये लोग गीतों में अमर हो गए। राजपूताने का ही निवासी व्यापारी अमरचन्द बांठिया अपने त्याग व बलिदान के लिए दूसरे भामाशाह के रूप में प्रसिद्ध है। इसने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति तांत्या टोपे को देने का प्रस्ताव रखा, ताकि अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष चलाया जा सके।

राजस्थान व भारत में क्रान्ति के दौरान एक बात यह रही कि क्रांतिकारी सैनिक अपनी छावनियों में विद्रोह करने के बाद दिल्ली की ओर बढ़े। दिल्ली पहुँचने पर वे लक्ष्यविहीन हो गए। उनकी एकता भी खंडित हो गई। इसके विपरीत जैसे–जैसे नाराज सैनिक दिल्ली की ओर बढ़े अंग्रेजों ने उनकी अनुपस्थिति में वहाँ पर पुनः अपना नियंत्रण कायम कर लिया। फलतः क्रांतिकारियों को स्थायी सफलता नहीं मिल पाई। देशी रियासती शासकों की ब्रिटिश स्वामी भक्ति के कारण अंग्रेजों ने अत्यन्त कड़ाई से क्रांति को दबा लिया। जून 1858 तक अंग्रेजों का अधिकांश स्थानों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।

आउवा की कुलदेवी सुगाली माता पूरे मारवाड़ क्षेत्र में आराध्य देवी रही है। इस देवी प्रतिमा के दस सिर और चौवन हाथ है। यह देवी प्रतिमा 1857 के स्वंतत्रता संग्राम में सेनानियों की प्रेरणा स्रोत रही है। कहा जाता है कि स्वाधीनता सेनानी अपनी गतिविधियाँ इस देवी के दर्शन कर प्रारंभ करते थे।

1857 के क्रांति के परिणाम एवं इसके विश्वव्यापी प्रभाव

यद्यपि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा, पर इसके परिणाम दूरगामी रहे। रियासती शासकों ने क्रांति के समय स्वामिभक्ति निभाते हुए अंग्रेजों का तन–मन–धन से सहयोग किया था। इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया। गोद–निषेध का सिद्धान्त समाप्त कर राजाओं को गोद लेने की अनुमति दी गई। भारत कम्पनी के शासन के स्थान पर ब्रिटिश क्राउन के सीधे नियंत्रण में आ गया। रानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा पत्र (1858 ई.) में आश्वासन दिया कि सभी देशी राजाओं का अस्तित्व बना रहेगा।

जागीदार वर्ग ने विद्रोह के दौरान अंग्रेज विरोधी भूमिका निभाई थी । अतः अंग्रेजों ने सामन्त वर्ग की शक्ति समाप्त करने की नीति अपनाई। सामन्तों से सैनिक सेवा के बदले अब नकद राशि ली जाने लगी। सामन्तों की सेनाएँ भंग की गई। उनके न्यायिक अधिकार छीन लिए। जागीर क्षेत्रों में सामन्तों की प्रतिष्ठा कम करने के प्रयास किए गए। उनके विशेषाधिकार भी छीन लिए गए। प्रशासन में सामन्तों की भूमिका समाप्त करने हेतु नौकरशाही में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अनुभवी व स्वामिभक्त व्यक्तियों को नियुक्ति देना प्रारम्भ हुआ। इसके फलस्वरूप राजभक्त अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग का विकास हुआ।

अंग्रेजों ने अपने सैनिक व व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुए रेलवे व सड़क व्यवस्था का विस्तार किया। शासकों के लिए भी अंग्रेजी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया ताकि वे ब्रिटिश तौर–तरीकों को अपनाएँ तथा उनकी निष्ठा ब्रिटिश ताज व पाश्चात्य सभ्यता के प्रति बनी रहे।

इस क्रांति ने भारत में आगामी ब्रिटिश नीतियों को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। बाद के सभी गवर्नर जनरलों ने जो निर्णय लिए उन पर इस क्रांति का प्रभाव नजर आता है। लॉर्ड डफरिन ने अपने कार्यकाल में कांग्रेस की स्थापना को जो अनुमति प्रदान की उसके पीछे उद्देश्य यह था कि भारतीयों को अपनी बात कहने का कोई मंच मिल जाए ताकि पुनः1857 ई. जैसी क्रांति न हों। बाद के काल में स्वतंत्रता सेनानियों, विशेषकर क्रांतिकारियों ने 1857 की क्रांति से प्रेरणा ग्रहण की।

इस क्रांति के परिणाम जो भी रहे हो, किन्तु यह सत्य है कि इसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद एवं औपनिवेशिक शासन की जड़ों को हिला दिया था। 1857 ई. की क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था। यह क्रांति विश्व में पहली बार यूरोपीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध विशालतम एवं महान् चुनौती थी। इससे बड़ा

संघर्ष किसी भी देश की क्रांतियों में नहीं हुआ था। इस घटना का वर्णन तत्कालीन समय के सभी वैश्विक समाचार पत्रों में मिलता है। हालांकि अंग्रेजों ने स्वतंत्रता संग्राम के स्थान पर इसे सैनिक विद्रोह कहकर इसके प्रभाव को सीमित करना चाहा, किन्तु सर्वप्रथम वीर सावरकर ने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा साबित कर दिया कि यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।

असफल होने पर भी इस क्रान्ति ने देशवासियों में स्वतत्रंता की भावना को जाग्रत किया। आने वाले समय में स्वतंत्रता आन्दोलनों को यह क्रान्ति प्रेरणा देती रही। भारतीयों की दृष्टि में यह क्रान्ति संघर्ष का अन्त नहीं बल्कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम अध्याय थी, जिसकी इतिश्री 1947 ई. में देश की स्वतन्त्रता के रूप में हुई ।

शब्दावली

अकाट्य	–	तथ्य जिसे काटा ना जा सके अथवा तथ्य पूर्ण बात
पॉलिटिकल एजेंट	–	देसी रियासतों में ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि
ए.जी.जी.	–	गवर्नर जनरल का प्रतिनिधि
खराज	–	एक प्रकार का कर या टेक्स

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें –

1. 1857 क्रांति का श्रीगणेश करने की तिथि क्या तय की गई थी ?
   (अ) 8 अप्रेल (ब) 29 मार्च (स) 31 मई (द) 9 मई ( )
2. कोटा में क्रांति का नेतृत्व किसने किया ?
   (अ) जयदयाल (ब) लक्ष्मीबाई (स) कुशालसिंह (द) कुँअर सिंह ( )
3. 1857 की क्रांति राजस्थान में कहाँ से शुरू हुई ?
4. कोटा में किस अंग्रेज अधिकारी की हत्या की गई ?
5. 1857 की क्रांति में गीत रचने वाले कवि कौन–कौन थे ?
6. 1857 की क्रांति में शहीद होने वाले प्रथम क्रांतिकारी कौन था ?
7. आउवा में हुई प्रमुख क्रांति की घटनाओं पर टिप्पणी लिखो ?
8. डूंगजी–जवाहर जी का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।
9. 1857 की क्रांति के कारणों का वर्णन कीजिये ।
10. 1857 की क्रांति की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिये ।
11. 1857 की क्रांति के परिणाम लिखिये ।

गतिविधि–

1. क्रांतिकारियों के चित्र संकलित कीजिये।
2. क्रान्ति से सम्बन्धित लोकगीतों का संकलन करें। अपने शिक्षक एवं अभिभावक का सहयोग प्राप्त करें ।